ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-8* September- 2021
Innovation The Research Concept

रामकुमार का जीवन परिचय एवं कलायात्रा के परिप्रेक्ष्य में
Biography of Ramkumar and in the Context of Kalayatra

Paper Submission: 10/09/2021, Date of Acceptance: 23/09/2021, Date of Publication:24/09//2021

दिलीप कुमार पटेल
सहायक आचार्य,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
हरियाणा केंद्रीय
विश्वविद्यालय,
हरियाणा, भारत

सारांश

कला समाज का सौन्दर्य प्रसाधक है, जो समाज का निर्माण करने में दिशा निर्देश देता है। यही बोध हमें आदिम कला से लेकर आधुनिक कला में होता है। प्रारम्भ से ही कला मानव जीवन शैली को अभिव्यक्ति करती रही है और मानव समाज के विकास में कला की प्रमुख भूमिका रही है। एक कला जब अपने विकास के चरम पर पहुँचती है तो उससे एक नई कला की शाखा निकलकर एक नई शैली का रूप पा लेती है और अपने समसामयिक समाज के जीवन शैली के अनुरूप विकास करती हुई, अपने चरम तक पहुंचती हैं।

भारतीय समाज में चित्रकला का प्रचलन सदियों से चला आ रहा है। इस प्रकार के प्रचलन को 'परम्परागत प्रतीक' कहते हैं। परम्परा जब रुढ़ि बन जाती है तो प्रतीत कला का जन्म होता है क्योंकि परम्परा के आधार पर बनायी गयी अपूर्ण कृतियों को भी प्राचीन बिम्बों के अनुसार देखा जाता है। समय के अनुसार 'यर्थाथ' के प्रति दृष्टिकोण बदल जाने से उसमें नये अर्थों का समावेश भी हो जाता है। भारत की कला में परम्पराओं ने अनेक नये अर्थों का समावेश किया जो भारतीय चित्रकला में देखे जा सकते है।

परम्परा सैदव जागरुक होती हैं। वह वर्तमान के साथ प्राचीन का समन्वय करके ऐसे रुपों का सृजन करती हैं जो प्राचीन पर आधारित किन्तु वर्तमान की आवश्यकता के अनुरुप होते हैं। यह रीति से पूर्णतः भिन्न होती तो रीति में किसी प्राचीन नियम की रुढ़िबद्ध अनुकृति की जाती है। रीतिबद्ध कलाकार की सभी रचनाएँ एक ही पद्धति पर ढ़ली होती हैं। भारतीय समाज भी प्राचीन समृद्ध परम्पराएं है, इसलिये कलाकार पहले प्राचीन कलाकृतियों की अनुकृति करते है और फिर उनकी प्रेरणा से नवीन कृतियों का सृजन करते है।

Art is the beauty of the society, which gives direction in building the society. This understanding comes from primitive art to modern art. From the very beginning, art has been expressing human lifestyle and art has played a major role in the development of human society. When an art reaches the peak of its development, a new branch of art emerges from it and takes the form of a new style and reaches its peak, developing according to the lifestyle of its contemporary society.

The practice of painting in Indian society has been going on for centuries. This type of practice is called 'traditional symbol'. When tradition becomes custom, then the art of appearance is born because even incomplete works made on the basis of tradition are seen according to ancient images. With the change in the attitude towards 'Reality' with the passage of time, new meanings are also included in it. Traditions in the art of India incorporated many new meanings which can be seen in Indian painting.

Traditions are always aware. By coordinating the ancient with the present, she creates such forms which are based on the ancient but according to the need of the present. If it were completely different from the custom, then the custom is a custom imitation of an ancient rule. All the works of a customary artist are cast on the same method. Indian society is also rich in ancient traditions, so artists first imitate ancient artefacts and then create new creations with their inspiration.

मुख्य शब्दः भारतीय समकालीन कला, चित्रशैली, चित्रों की रंग योजना, भारतीय शिल्प षडंग, पाश्चात्य कला, रजा और शैलोज मुखर्जी।

Indian Contemporary Art, Painting Style, Color Scheme of Paintings, Indian Craftsmanship, Western Art, Raza and Shailoj Mukherjee.

प्रस्तावना

भारतीय समकालीन कला में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले रामकुमार की गणना भारत के सर्वश्रेष्ठ ''अमूर्त चित्रकारों'' में होती है। सुरु तो उन्होंने आकृतमूलक चित्रों से किया था। जिनमें मध्यवर्गीय के अनेक मर्मचित्र शामिल थे, पर बाद में लगभग छः दशकों से लैण्डस्केप ही बनाते रहे। उनकी रंग योजना धीरे-धीरे विशिष्ट होती गयी और रामकुमार के चित्रों की पहचान ही बन गयी। बनारस के बहुत से दृश्य चित्र बनाये। इन चित्रों में बनारस की वास्तुकला तथा छोटी-छोटी गलियाँ गंगा के घाट पर ले जाती हुई तथा उसके पश्चात विशाल रूप में परिवर्तित होती हुयी दिखाई गयी है। उन्होंने सामाजिक जीवन के शहरों तथा मध्यवर्गो के परिवारों की आकृतियों दोनों का चित्रण किया है तथा उनके चेहरे पर वेचैनी व उदासीनता के चिन्हों को रंगों के करूणात्मक प्रयोग द्वारा चित्रित किया है। चित्रों में रंगों के साथ ऐसा ही क्रियात्मक प्रयोग रामकुमार के चित्रों में देखा जा सकता है। रामकुमार के द्वारा बनाये गये प्रकृति चित्रण में रंगों का एक अद्भुत समन्वय है। चित्र में रामकुमार अपने स्वभाव

के अनुमय कोमल रंगों को करते थे और धूमिल रंग लगाते थे। वे रंगों का नियोजन अपनी मन स्थिति के अनुरूप करते थे और चित्रों में नवीन रूप दर्शाते थे। आपके चित्रों में पिकासो, मातिस व ब्राक जैसे कलाकारों का प्रभाव भी स्पष्ट है। रामकुमार प्रमुख रूप से दृश्यचित्रकार के रूप प्रसिद्ध थे। सन् 1945 ई0 में कला प्रदर्शनी में भाग लिया और वही से प्रभावित हुये थे। उसके बाद शैलोश मुखर्जी के निर्देशन में कार्य किया। उन्होंने सन् 1965 से 1967 ई0 तक स्याही तथा मोम रंगों में रेखा चित्र बनाये थे। इसके बाद एक्रेलिक रंगों को अपना माध्यम बना लिये और इनके चित्रों पर प्रभाववाद तथा घनवाद का प्रभाव दिखायी देते है। चित्रों के द्वारा ये नई दूनिया की रचना करते थे, इसलिये मनुष्य की सभ्यता का चित्रकार भी कहा जाता है। उन्होंने अपनी बुद्धि विवेक प्रगतिशील तथा चिन्तन युक्त आसाधारण प्रतिभा से भारतीय समकालीन कला प्रभाव को एक नयी दिशा प्रदान किये। इसी संदर्भ में अवनीन्द्रनाथ ठाकुर का वक्तव्य उल्लेखनीय है, "यह सत्य है कि अपने विगत काल की परम्परा के बिना कोई कला नही हो सकती, लेकिन यह भी समान रूप से सत्य है कि कोई कला अपने वर्तमान से सम्पर्क किये बिना नही रह सकती।"

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य रामकुमार के जीवन वृत्त, कृतित्व एवं शिक्षा-दर्शन का अध्ययन करना और कलाकार के माध्यम से समाज में हुये बुराइयों और अच्छाइयों को कागज, कैनवास पर दर्शाता है। यह समाज को जागरूक करने की अपनी अभिव्यक्ति होता है। इस तरह से कला में भारतीयता एवं सृजनात्मकता के सन्दर्भ में रामकुमार स्वंय कहते है- भारतीय चित्रकला यहाँ के जनजीवन की उपज है, कलाकार अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त कर जो आकृति सृजित करता है वही कला है। भारत एक विभिन्न समृद्ध-सांस्कृतिक परम्पराओ वाला देश है, यहाँ हजारों कला शैलीयों भारतीय परम्पराओं को जोडने का कार्य करती है। प्रस्तुत शोध लेख से भारतीय समकालीन कला में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले रामकुमार के जीवन और कला शैली में इंगित विचारों के साथ-साथ आधुनिक कला और आधुनिक कलाकारों से अवगत हो सकेगें। इस महान कलाकार ने निष्ठा भाव से कला जगत में कार्य किया और बहुत ही ईमानदारी के साथ इन्होंने जो कलागत तकनिकी अपनायी उनकी सीमाओं का कभी भी अतिक्रमण नही किया, बल्कि एक कलाकार के रूप में पूरी तरह से संयम बरता और संयम रहें। ऐसे कलाकार के विचारों से आने वाले कलाकार के लिये प्रेरणादायक होगा। वर्तमान लेख का ध्येय रामकुमार की कार्य शैली का परिचय कराकर विस्तार से अध्ययन किया गया ताकि रामकुमार की कार्य शैली का सही अध्ययन किया जा सके।

रामकुमार का जीवनयात्रा

रामकुमार का जन्म शिमला में एक खत्री परिवार में सन् 1924 ई0 में हुआ था। इनके पिता पटियाला से सम्बन्धित थे और माता दिल्ली की थी। रामकुमार के पिता को क्रमशः शिमला तथा दिल्ली में रहना पड़ता था। रामकुमार प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करने के बाद "हरकोर्ट बटलर" से हाईस्कूल की शिक्षा प्राप्त किये। उन्हें अपने छात्रावस्था में वायलिन बजाने का शौक था, किन्तु बी0ए0 तक आते-आते रामकुमार का संगीतज्ञ बनने का स्वप्न धूमिल हो गया। बी0ए0 के उपरान्त उन्होंने सेन्ट स्टीफेन कॉलेज में अर्थशास्त्र पढ़ने हेतु एम0ए0 में प्रवेश लिये। वहाँ उन्हें डॉ0 वी0के0आर0वी0 राव तथा डॉ0 जाकिर हुसैन जैसे शिक्षक मिले। एम0ए0 करने के दौरान ही उन्हें हिन्दी साहित्य में भी विशेष रूचि उत्पन्न हो गयी। कुछ वर्षो के उपरान्त उनकी कहानियाँ छपने लगी। सन् 1943 ई0 में रामकुमार एम0ए0 अर्थशास्त्र में अध्ययन करते हुए वे 'शारदा चरण उकील' के कला विद्यालय में भी पहुँच गये। वहाँ के संध्या-कालीन कक्षाओं में पश्चिमी कला का अध्ययन करने लगे और उन्हें शैलोज मुखर्जी पढ़ाते थे। उन्होंने छुट्टी के दिनों में प्रातः कालीन कक्षाओं में वे बंगाल शैली का अध्ययन किये।
रामकुमार अर्थशास्त्र में एम0ए0 करने के उपरान्त शिमला में अपने चाचा के साथ बैंक में नौकरी करने लगे और 1947 ई0 तक बैंक में काम करने के पश्चात वे अनुभव किये कि वे प्रातः 9 बजे से सांय 5 बजे तक वहाँ लगातार कार्य नहीं कर सकते, अतः उन्होंने अल्पकालीन काम ढूंढना आरम्भ कर दिये। रामकुमार अपने अवकाश के समय साहित्य और कला का सृजन भी प्रारम्भ कर दिये। राजकुमार ने "सन् 1946 ई0 में ऑल इण्डिया फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफ्टस सोसाइटी" द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी को देखकर अपनी कला की दिशा निर्धारित किये। उस समय वे एक साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके थे, अतः अपनी समस्त मान्यताओं और संवेदनशीलता के साथ वे कला के क्षेत्रों में आगे बढ़े। आज रामकुमार हमारे बिच नही रहें, वे अन्तिम समय तक पेन्टिग किये और 14 अप्रैल 2018 को दिल्ली में उनका मृत्यू हो गया।

कलायात्रा का विकास क्रम

रामकुमार, कला के विकास क्रम को तीन काल में बाँट सकते हैं।

प्रथम काल

सन् 1951-1960 ई0 तक प्रथम काल माना है, जिसमें उन्होंने आकृतिपरक चित्रों का सृजन किये। इन चित्रों में उन्होंने मानवीय संवेदना एवं त्रासदी को उनके सामाजिक परिवेश को विशेष रूप से उजागर किया गया है। बेरोजगार स्नातक, बेकारी के दिन नवयुवक, निराश्रित, एक चेहरा तथा खण्डहर आदि चित्र इसी काल के हैं। स्त्री-पुरुषों की आकृतियों के ये चित्र सामाजिक घूटन, असुरक्षा और विकृष्ट समाज व्यवस्था के विरोध के प्रतीक हैं। इनमें व्यक्त भाव को समझकर हम आज के आदमी की अवस्था तथा अवसाद से परिचित हो सकते हैं। चित्रों के द्वारा नई दुनिया की रचना करने वाले रामकुमार "मनुष्य की सभ्यता" के चित्रकार हैं। उन्होंने अपनी समकालीन चित्रकारों की भाँति अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न मध्यमों का प्रयोग किये और अपने तूलिकाघातों के द्वारा चित्रों की एक नई, अजीबो-गरीब दुनियाँ की रचना कर डालें।

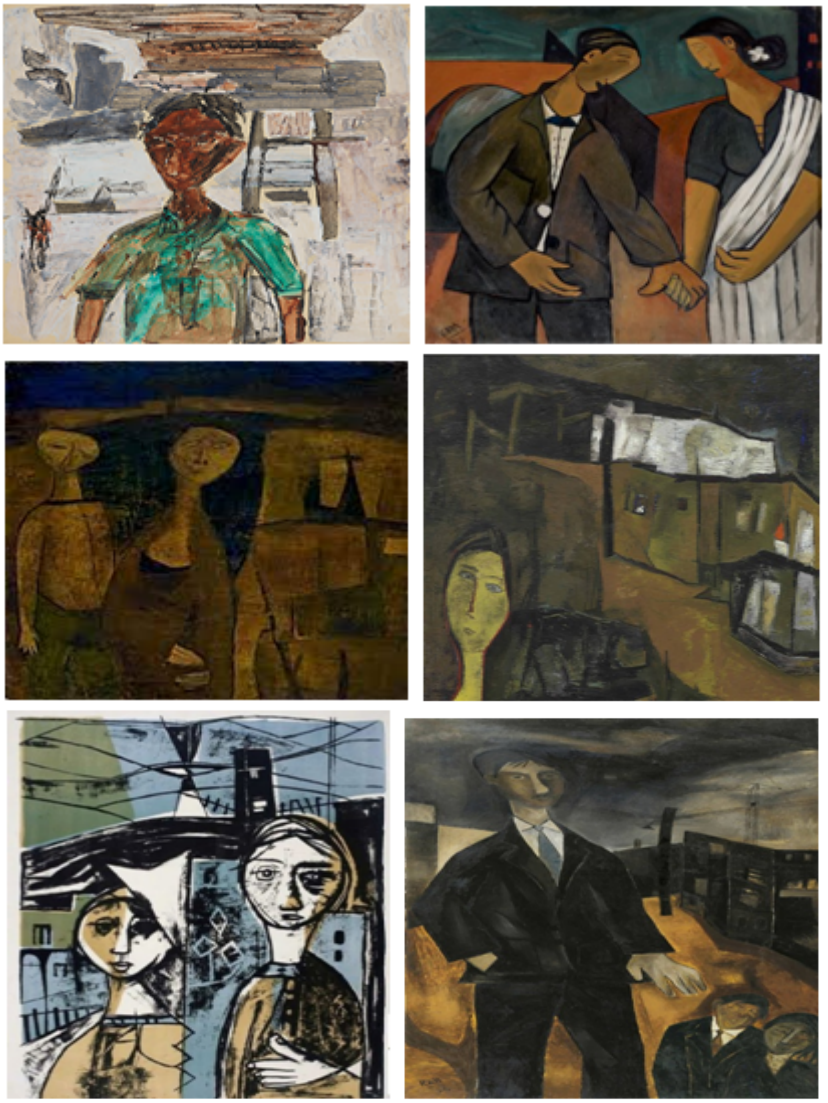

(आकृतिपरक चित्र)

द्वितीय काल

सन् 1961-1970 ई0 तक रामकुमार के चित्रों का दूसरा काल है, इसे हम दृश्य चित्रों या सैरों का काल भी कह सकते हैं। बनारस पर आधारित रामकुमार ने बहुत रेखांकित चित्र और छापे बनाये हैं। वह बनारस कई बार आये, सबसे पहले रामकुमार बनारस 1961 में आये थे। एक बार तो कुछ दिनों तक यही रहकर घाटों तथा गलियों का रेखांकन किये। बनारस की बनावट से रामकुमार के मूल स्वभाव का एक अजीब मेल है। जैसे बनारस की बंद गलियाँ खुलती हुई गंगा के घाटों पर ले जाती हैं और फिर दिखायी पड़ता है नदी, रेत, आकाश, धाटों का विस्तार, गंगा नदी में साइबेरियन पंक्षियों का झुड आदि वैसे ही रामकुमार की कला से चारदीवारियों, बंद गलियों से निकल कर खुले में खड़े होने की इच्छा बराबर दिखायी पड़ती है। यह आकस्मिक नहीं है कि बंद स्टूडियो में काम करते-करते रामकुमार को शाम को दिल्ली के अपेक्षाकृत खुले इलाकों में थोड़ी देर के लिए निकल जाना आज भी पसन्द है। रामकुमार स्वयं कहते हैं, "गलियों से निकल कर बनारस के घाटों पर आ जाना बराबर एक विचित्र अनुभव रहा, लोगों के भीड़ के बीच से जाती शवयात्राएँ, झुर्रीदार चेहरे-जीवन-मृत्यु की रेखा को धुँधला सा करते लगते थे। कुछ कुछ चेहरों को देखकर पुराने खिड़की-दरवाजों की याद आ जाती थी।"

बनारस रामकुमार की कला में बहुत कुछ जोड़ा है। तकनीकि दृष्टि से भी उनके चित्रों के स्पेस-विभाजन के सिल्सिले में हम बनारस को याद रख सकते हैं। मैं बनारस में अपने साथ कुछ कागज, कुछ ब्रश और काली जापानी स्याही और मोमबत्ती लेकर ही आया था। हर शाम को घाटों से थककर लौटता तो स्केचों के आधार पर कागजों पर काली स्याही और मोमबत्ती से कुछ ड्राईंग बनाने की कोशिश किया करता। मोमबत्ती जिन स्थानों पर घिस दी जाती, वहाँ काली स्याही अपना रंग छोड़ती थी। इसमें उतना ही आकस्मिक परिणाम निकलता था जितना कि स्केचिंग या लिथोग्राफी में निकलता है। रामकुमार का वाराणसी से जैसे आत्मीय सम्बन्ध हो गया। वहाँ उन्हें सम्पूर्ण भारत एक लधुरूप में दिखाई दिया। भारत की विषमताएँ और विडम्बनाएँ उन्हें यहाँ के परिस्थितियों में दिखायी दी। "वाराणसी" सीरीज के इन चित्रों में नगरीय चेतना अभिव्यक्त हुई है। वाराणसी के लोग, यहाँ के

भवन, घाट, गंगा का विशाल तट और नावें, बालू रेत का विस्तार, सीड़ियाँ आदि, सब कुछ इन चित्रों में दर्शायें है।

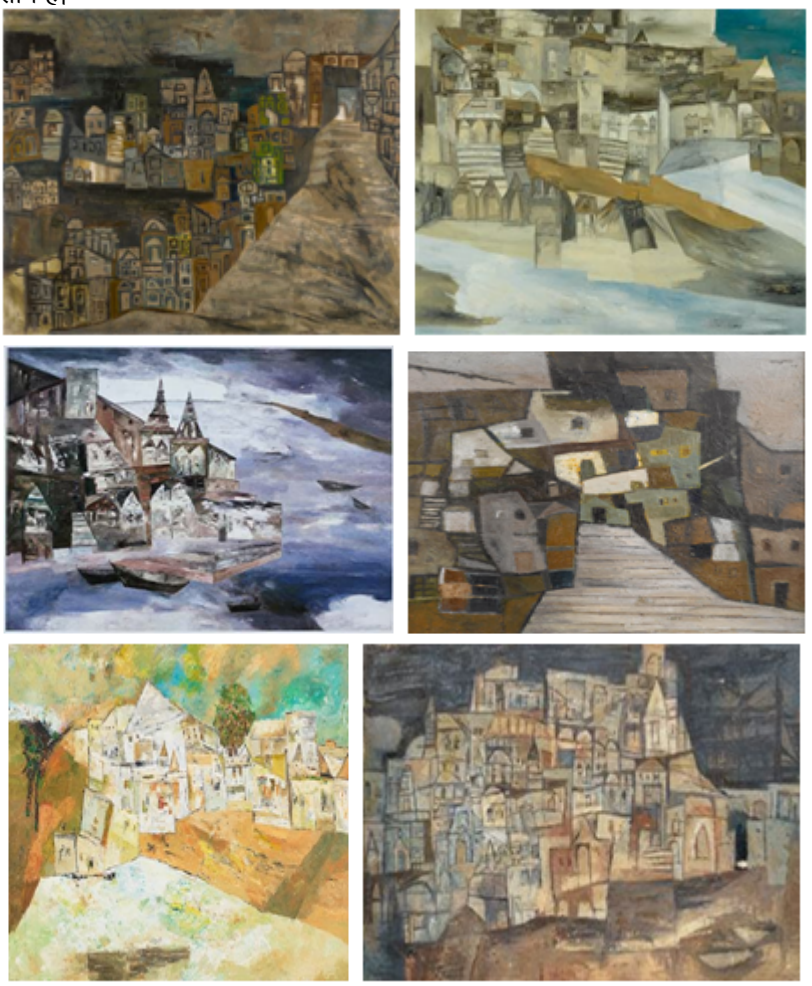

(बनारस श्रृंखला)

तृतीय काल

सन् 1970 ई0 को रामकुमार के चित्रों का तीसरा काल अमूर्तन एवं अपरूप कला का काल है, जो सन् 1970 ई0 से अब तक चला आ रहा है। वस्तुतः आकृतिपरक से अरूपता की ओर आए सम्पूर्ण भारतीय चित्रकारों को जटिल अनुभवों की अभिव्यक्ति के लिए आकृतिमूलकता अपर्याप्त प्रतीत है। रामकुमार भारत के उन प्रमुख चित्रकारों में से है, जिन्होंने अमूर्तन कला की स्थापना की।

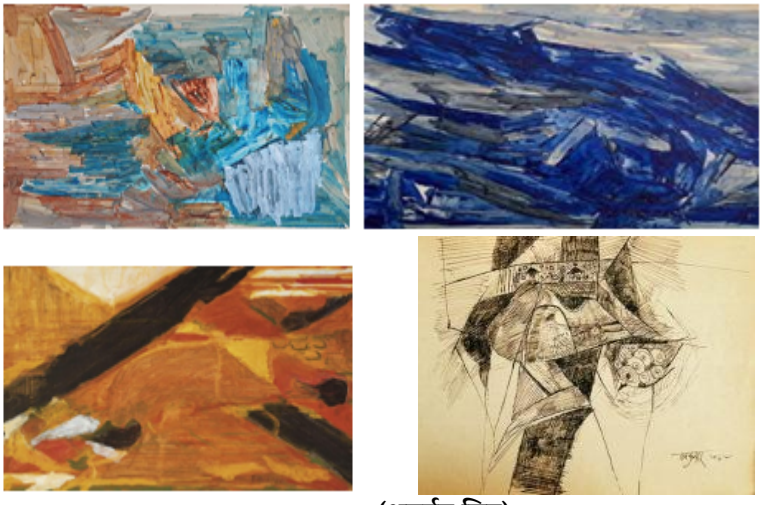

(अमूर्तन चित्र)

रामकुमार का दिल्ली शिल्पी चक्र संस्था में योगदान

रामकुमार ने सन् 1948 ई0 से प्रदर्शनियों में अपने चित्र भेजना प्रारम्भ कर दिया और 'दिल्ली शिप्ली चक्र' के सदस्य बन गये। आपकी कृतियों में विजय सूचक पुनरावृत्ति, महत्वपूर्ण रहीं क्योंकि उनमें प्राचीन परिचित बिम्बों को पुनः जीवन दिया गया। रामकुमार के दृश्य चित्र में विशाल भू-अंचल और उसमें फैली पर्वत शृंखला भारतीय समकालीन कला के विकास में सार्थक भूमिका निभाते हैं। दिल्ली शिल्पी चक्र संस्था, बम्बई के प्रगतिशील कलाकार ग्रुप के समान प्रभावशाली तो नहीं थी फिर भी इसके चित्रकारों को एक मंच पर संगठित करने में सहायता की। रामकुमार जी ने इसके तत्वावधान में शिमला तथा दिल्ली में प्रदर्शनियाँ किये।

सन् 1948 ई0 में रजा के काश्मीरी दृश्य चित्रों की प्रदर्शनी दिल्ली में हुई। रामकुमार, रजा से मिले और उनकी कला से भी बहुत प्रभावित हुए। वे रजा के साथ बम्बई गये और सूजा, आरा तथा सामन्त आदि से मिले। मुल्कराज आनन्द ने भी राजकुमार जी को प्रोत्साहित किये। रजा के गुरु रामकुमार को चित्रकला के क्षेत्र में से हट जाने को परामर्श दिये और उसमें प्रतिभा तथा कला कुशलता की कमी बतायी। किन्तु रामकुमार कला में ही आगे बढ़ने का निश्चय किये। उन्होंने विदेश जाने को भी ठान लिए और कुछ सरकारी सहायता तथा कुछ धन अपने पिता से लेकर फरवरी 1950 ई0 में वह पेरिस चले गये। पेरिस में कई मित्र बनायें और साम्यवादी विचारकों के सम्पर्क में आये। वे साम्यवादी गतिविधियों में भाग लेने लगे। यहाँ रामकुमार जी की मानववादी विचारधारा और भी परिपक्व हुई। रामकुमार वारसा, हेलासिंकी तथा कोलम्बों के शान्ति सम्मेलनों में भी गये। वे रूस तथा हंगरी में अनेक विद्वानों से मिले। रामकुमार समाज के लिए प्रतिबद्धता अनुभव करने लगे। अस्तित्व वादी निराशा का उत्तर उन्हें कर्तव्य पूर्ति और सृजन की सार्थकता में मिला।

रामकुमार की कलाकृतियों में अमूर्तन कला का प्रवेश

रामकुमार के कृतियों में यूरोपीय प्रवृत्तियों का प्रभाव पड़ा। ये नव-प्रभाववाद, अभिव्यंजनावाद तथा धनवाद, फाववादी प्रवृत्तियों के कलाकारों से प्रभावित रहें। रामकुमार ने रंगों के प्रयोग को अधिक महत्व दिये। पंजाब के अमृतसर जिले में जलियॉवाला बाग की नृशंसता, बंगाल का असहनीय दुर्भिक्ष, देश-विभाजन की पीड़ा तथा साम्प्रदायिक दंगों से आहत भारतीयों की संवेदना को भारतीय कलाकारों ने सशक्ता से अभिव्यंजित किया। रामकुमार ने अपने मनोभावों के अनुसार महिलाओं की मार्मिक वेदना, विषाक्त वातावरण तथा जीवन के घृणित व क्रूर क्षणों को गहरे रंगों तथा तनावपूर्ण रेखाओं द्वारा अत्यन्त मार्मिकता से अभिव्यंजित किये।

रामकुमार सन् 1950-1951 ई0 के मध्य पेरिस में रहे। वे पेरिस में आन्द्रेल्होते की कार्यशाला में प्रवेश किये किन्तु वहां उन्हें अकादमिक धनवाद की सीमा में जकड़ जाना पसन्द नहीं आया और वे फरनान्ड लेजे के पास चले गये जो आधुनिक महान चित्रकार होने के साथ-साथ आधुनिक दल के सदस्य भी थे। किन्तु रामकुमार उनके बहुत अधिक रहस्य ग्रहण न कर सके। लेजे हमेशा उनके वर्णनात्मक होने की आलोचना करते रहते थे। कला में सामाजिक यर्थाथवाद को प्रस्तुत करने की शैली क्या हो और आकृति तथा उसमें निहित भाव का परस्पर क्या सम्बन्ध है, इन प्रश्नों का चित्रकला की दृष्टि से कोई समाधान नहीं हो पाया है।

सन् 1951 ई0 में रामकुमार पेरिस् से भारत लौट आये दिल्ली शिल्पी चक्र के फ्रेंच चित्रकारों के दल से भी सम्बन्ध स्थापित कर लिए और उन्हीं लोगों के साथ चित्र बनाने तथा प्रदर्शित करने लगे। सन् 1952 ई0 में रामकुमार की मुलाकात कला- आलोचक 'रिचर्ड बोर्थोलोम्यू' से हुई और 1955 ई0 तक रामकुमार भारत के पाँच-छः मूर्धन्य चित्रकारों में गिने जाने लगे तथा प्रत्येक प्रदर्शनी में इनके चित्र प्रदर्शित होते दिखायी देने लगे। सन् 1956-1958 ई0 में ललित कला अकादमी ने उन्हें सम्मानित किया और 1971 ई0 में रामकुमार को भारत सरकार द्वारा "पदमश्री" की उपाधि प्रदान की गयी। समकालीन भारतीय कला में रामकुमार की अमूर्तन कला का महत्वपूर्ण स्थान है। मूर्तन और अमूर्तन दोनों पद्धतियों में कलाकार ने जो कृतियाँ रची हैं, वे एक तरफ तो कला को नया मुहावरा देती हैं तो दूसरी तरफ कला के समकालीन सन्दर्भों को नया अर्थ देती हैं। चाहे रंगों का प्रयोग हो, चाहे तूलिकाघातों का चमत्कारिक आवेग हो या चाहे चित्रकार की व्यंजकता हो, रामकुमार की कला अपने सीधे अर्थों में समकालीन कला का महत्वपूर्ण अध्ययन है। यह संयोग ही है कि रामकुमार चित्रकार के साथ-साथ हिन्दी के महत्वपूर्ण कथाकार भी हैं। उनकी हिन्दी साहित्य कहानियाँ श्रेष्ठ कहानियों में शुमार होती हैं। भाषा में सर्जक होने से रामकुमार के कलाकार को जो सन्दर्भ और मनुभूति सहज ही उपलब्ध होती है। यही कारण है कि कलाकार की अमूर्तन में बनी कृतियों का भी एक ठोस सन्दर्भ होता है। इस सन्दर्भ में समय, परिवेश और संस्कृति का परीक्षण भी सम्भव है तथा कलाकार के मानसिक उद्वेलन के बीच कृति के चित्रकार का रहस्य भी बहुधा इन्हीं विशेषताओ के कारण रामकुमार के अमूर्तन को दर्शक अपने-अपने अर्थ सन्दर्भों में देखकर चकित होते हैं और उनका हर नया काम नये आस्वाद के साथ प्रकट होती है।

रामकुमार का कलात्मक एवं समीक्षात्मक दृष्टिकोण

रामकुमार का रुझान चित्रकला में बचपन से ही था लेकिन लेखक के रुप में अपनी पहचान बनाने में लगे हुए थे। इसके लिए उन्होंने कड़ा संघर्ष किया, अनेक बाधाएँ पार की। तब उनके जीवन में एक नई उमंग आई जब वह 1950 से 1951 ई0 तक पेरिस में चित्रकला का अवसर मिला। वहाँ उन्हे विख्यात कलाकारों आन्द्रेल्होत तथा फरनान्ड लेजे के अधीन चित्रकला की विधिवत् शिक्षा प्राप्त किये। इसके बाद 1970 में उन्हें जे0 आर0 डी0 थर्ड फण्ड फेलोशिप मिली जिससे उन्होंने अमेरिका की यात्रा किये। एक कलाकार के रुप में रामकुमार ने लगातार संघर्ष किये, नये-नये प्रयोग किये और कला के नये पाठों से परिचत प्राप्त किये। अपने स्वभाव से शान्तचित और सौम्य रहने वाले रामकुमार को ऐसे अनेक अवसरों पर गहरा दुःख भी हुआ जब उनसे कनिष्ठ लोगों को महत्व मिला। परन्तु पुरी निष्ठा से काम चलता रहा और एक समय ऐसा आ ही गया जब वे कला के शीर्ष पर पहुंचे, कलाजगत में एक प्रेरक बने। रामकुमार के जीवन में 1960 ई0 तक का समय ऐसा रहा जब वे लेखन और कलासृजन के द्वैत में रहें। बाद में धीरे-धीरे यह द्वैत समाप्त हुआ और दोनों ही स्तरों पर वे कार्य में लगे। रामकुमार भारत विभाजन की हस मर्मा तक त्रासदी को उन्होंने महसूस किया तथा अपना पहला उपन्यास "घर बने घर टूटे" लिखे। उनकी कहानियों और उपन्यासों के चरित्र रामकुमार की कला में

आते। अपने समय की मार झेलते चरित्र दुःख, अवसाद और निराशा में डूबते दिखाई देते हैं, जिसके सामने अब कोई सपना नहीं बचा। परिवार, दो बहने, स्त्री, सपना, शहर और अलविदा अतीत जैसे आकृतियों को विभाजन की त्रासदी से ही जोड़ कर देखा जाता है। अपने उपन्यास, कहानियों और चित्रकृतियों में रामकुमार बीसवीं सदी के उस भयावक त्रासदी से जूझ रहे थे जिसने लाखों जाने ली, लाखों घर उजाड़े, धर्म की चिन्दियाँ बिखेरी। जो उस गहरे उस भयानक अतीत में ले जाती है। उस दौर की कथा रचनाओं में भी रामकुमार इसी त्रासदी को रुपायित कर रहे थे।

रामकुमार का अमूर्तता की ओर लौटना और भू-दृश्यों को चित्रित करना कोई घटना नहीं था। शिमला जैसी पर्वतीय नगर में उनका जन्म हुआ, बचपन खूबसूरत वादियों में बीता। प्राकृतिक दृश्यों का अक्स उनके दिलों दिमाग पर ऐसे छाया कि वह अनेक कलाकार की कृति का स्थायी भाव ही बन गया। उनके लेखन में भी प्रकृति का वैसा ही चित्रण उभर आता है जैसा कि उनकी कलाकृतियों में दिखायी देता हैं।रामकुमार की आकृतिमूलता में तो साहित्य एक आख्यान के रुप में अपनी अंतःजातीय सम्वेदना के साथ उपस्थित रहा हैं। इस सूत्र के सहारे देखों तो रामकुमार की बनारस श्रृंखला की कृतियों में भी गहरी दार्शनिकता से साक्षात्कार होता है। यह दर्शन कला में जहाँ आकृतिमूलकता से 'मुक्ति' का उद्घोष करता है, वहीं जीवन के कल्मषों से 'मुक्ति' की घोषणा भी है।

बनारस श्रृंखला की कृतियों में उन्होंने आकृतिमूलकता से युक्ति लेकर एक युग का सूत्रपात किया, वह आगे चलकर एक ठोस वास्तु (आर्किटेक्चर) में बदल गयी। रामकुमार के तीसरे चरण की कृतियों में भवन, मकबरे आदि के शिल्प सहजता से उभरे लक्षित होते हैं जो अमूर्तन में भी एक नये आस्वाद का सूचक हैं। ऐसी कृतियों में अनेक शीर्षकहीन काम शामिल हैं जो 1990 ई0 के बाद निर्मित हुए। पर सभी चरणों की कृतियों में रामकुमार का 'एकान्त' दृश्य में उभरता हैं एक शून्य को रचती हुई कृति अपनी निस्तब्धता में शान्ति का विन्यास देती है। इनमें दर्शक अपने भीतर के एकान्त को पर्यवासित करता हुआ मौन से साक्षात्कार करता हैं। दूर-दूर एक पसरी उदासी, शान्ति, सूनापन जैस कलाकार के वैयक्तिक जीवन को साक्षात करते है। यह कहीं कलाकार के भीतर का सन्नाटा भी है जो वीतरागी है। कहते हैं कि रचना कृतिकार के व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित करती है।

रामकुमार के व्यक्तित्व से उनकी कृतियों को चाहे प्रत्यक्ष न जोड़ा जा सके, पर यह स्पष्ट है कि इन कृतियों में प्रकृति, परिवेश और आज के समय के सन्ताप की गहरी गूंज है। दूर तक पसरे पर्वत, विस्तार में झाँकती रेत, खिड़कियों से दिखती चोटियाँ और रेखाओं में उभरते गुम्बद, मेहराब, इमारतें और मकबरे अपनी निर्जनता में बहुत कुछ कहते हैं, जैसे रामकुमार की खामोशी सब कुछ कह जाती है। इस कलाकार में अपनी ही धुन हैं जिस तरह कला को सिद्धान्त नहीं चलाया करते, उसी तरह रामकुमार कलाकार को कला में आते-जाते नारों की परवाह नहीं होती। वे अपनी ही मस्ती में बढ़े जाते हैं जैसे कहानियों और उपन्यासों में अनेक चरित्र बढ़ते जाते हैं- सारी बाधाएँ तोड़कर बढ़ते जाते हैं।

यह आश्चर्य में डालने वाला तथ्य है कि चाहे रामकुमार की कला में कोई भी चरण क्यों न आया हो, उसमें परितर्वन क्यों न घटित हुए हों- सब चरणों में कलाकार की खोज 'श्रद्धा' की ही रही है। एकान्त सूनापन, अवसाद पर उजास की हल्की कौंध की उम्मींद में विन्यस्त रामकुमार की कला एक तरह से भारतीय सांस्कृतिक अपसरण का एक अध्ययन हैं इसमें हम बहुत ही गहराई से चीजों की बनती-बिगड़ती शक्लों के भीतर मूल्यों के क्रमिक अपसरण का सूचकांक देख सकते हैं। इस काल में मूर्तिमान भूदृश्य भी गहरे अर्थों के संवाहक हैं जो मानवीय नियति को प्रस्तुत करते है। इस कला का मंत्र केवल 'देखना' और 'आनन्द' पाना नहीं है, अपने को विचारना, अपने को जानना भी हैं। उनकी कला के इस अभिप्रेत अर्थ को आलोचक समझने की जरुरत नहीं मानते।

ऐसी कला वह कलाकार ही दे पाता है जो अपने को कृति में विलीन कर देता हैं, रामकुमार ने अपनी कला में निरन्तर यही किये है। रामकुमार की कुछ अन्य प्रसिद्ध कृतियों में प्रकाश और छाया के बीच, नदी, खण्डहर, स्मृति में, प्रतिबिम्ब, घर, घाट, बसन्त, श्रद्धांजलि, विपन्न आदि की गणना होती है जो उनके विपुल शीर्षकहीन भूदृश्यों के अतिरिक्त हैं। दो उपन्यास और छः कहानी संग्रहों के लेखक रामकुमार ने बनारस और यूरोप की यात्रा के अनुभवों पर भी दो पुस्तके लिखी हैं। एक कलाकार से अलग वे हिन्दी के महत्वपूर्ण कथाकारों में गिने जाते है। जाहिर हैं, उनकी कला को जानने-समझने का एक सूत्र यह भी है कि कला प्रेमी उनके साहित्य से भी निश्चय ही परिचित होगें।

रामकुमार अपने चित्रों के सन्दर्भ में कहना है, "जब कभी चित्रों के विषय में प्रश्न मुझसे पुछे जाते है, तो इमानदारी के साथ कुछ भी कहना मुझे लगभग असंम्भव सा जान पड़ता है। जब मैं स्वयं ही इनके बारे में कुछ नहीं जानता तो दूसरों को क्या बतला सकता हूँ, सिवाय इसके भी इसकी रचना प्रक्रिया क्या की।" अपनी नई कलाकृतियों की रचना प्रक्रिया के बारे में बात करते हुए रामकुमार ने बताया कि "यह बात सही है कि सर्दियों की सुबह आकाश को देख कर एक दम खुला-खुला लगता है और मुक्ति सी महसूस होती है। इस श्रृंखला के चित्रों में "स्काईस्केप" अधिक मात्रा में हैं। नाटकीय रंग भी नहीं है- एक रंगी अनुभूति लाने की चेष्टा की थी जिससे किसी प्रकार के टकराव और संघर्ष से बचा जा सके। जब लद्दाख गया था तो ऐसा महसूस हुआ था, पर पेंटिंग का ध्यान नहीं आया था। अपनी पेन्टिग के बारे में एक महत्वपूर्ण बात मुझे यह भी लगती हैं कि वे किसी एक पेन्टिंग में पूरी नहीं होती। उसमें एक तरफ निरन्तरता बनी रहती हैं। खासकर यह चित्र श्रृंखला एक ही सूत्र और एक ही समस्या को लेकर बनाई। इन्हें एक साथ देखकर एक दर्शक इनका पूरा आनन्द प्राप्त कर सकता है। कहानियों में भी कई बार मैंने एक ही स्थिति, एक ही चरित्र को व्यक्त करने की चेष्टा की हैं। इससे दुहराव हो सकता है, पर चीजें अधिक तीव्रता से अपनी अभिव्यक्ति पाती हैं। किसी नए बिन्दु पर आने के बाद चाहता हूँ कि उसे बहुत दूर जाकर छोड़ूं"। अपनी प्रेरणा के लिए रामकुमार जी अक्सर दो-तीन महीनों के बाद किसी नए शहर, लैण्डस्केप, नई स्थिति में कुछ दिनों के लिए चले जाते थे। कोशिश रहती है कि ऐसी जगहों पर जाया जाए जहाँ दिल्ली के लैण्डस्केप से मिलते-जुलते लैण्डस्केप न हो। दिल्ली में रामकुमार लगभग रोजाना ही पेन्टिग करते थे। ज्यादातर सुबह के वक्त, लेकिन दिल्ली के बाहर जा कर अपने पुराने काम पर सोचने की जरुरत महसूस करते थे। काम करते वक्त इतना नहीं सोचते थे। "सुबह के वक्त मैं लिखता नहीं हूँ, शाम को लिखता हूँ।"

रामकुमार ने कहानियों की प्रेरणा के बारे में बात करते हुए बताया कि "पात्रों की कमी जरुर महसूस करता हूँ, काल्पनिक पात्र बहुत कम लेता हूँ। इसमें सफलता नहीं मिली है। परिचित शहर के किसी परिचित घर में जरुर एक नई तरह का "प्लाट" सोचने की सुविधा मिलती है।" चित्र प्रदर्शनी और चित्रकला के दर्शकों की बात आई तो रामकुमार ने कहा कि "प्रदर्शनी करने की बात से मुझे बहुत "डिप्रेशन" होता है। वह एक कृत्रिम काम है, परन्तु उसका व्यावहारिक महत्व है इतना साहस नहीं की उसे न करुं। करीब एक दो मित्र जब मेरा काम देखते हैं तो अच्छा लगता है। संख्या में दो सौ आदमी हो या पचांस यह बहुत महत्वपूर्ण नहीं है। मुम्बई की कला वीथी में लोग सैकड़ों की संख्या में आते है। वहाँ चलन सा हो गया है कि प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम के बाद आर्ट गैलरी जाना है। एक दरवाजे से आकर लोग दूसरे दरवाजे से चले जाते है। जहाँ तक कहानी का सवाल है, पाठक एकाध घण्टा उसको देगा ही। यहाँ पर दर्शक एक चित्र को एक घण्टे भी देख सकता है, और एक मिनट में भी। किसी महत्वपूर्ण प्रदर्शनी में कम लोगों को देखकर अच्छा नहीं लगता।

रामकुमार की राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियाँ एवं प्राप्त पुरस्कार व कृतित्व की विशेषताएँ

रामकुमार आरम्भ में आकृति-मूलक चित्र बनाये फिर दृश्य चित्रों का एक दौर आया जो आगे चल कर नगर चित्रण तक पहुँचा और फिर अपना वर्तमान दौर जिसमें दृश्यमान ही परिवर्तित हो गया। उनके चित्रों में आत्मानुभव के चित्र हैं जिसमें अमूर्तन के बावजूद भी मार्मिकता झलकती है। दोनों क्षेत्रों में पुरस्कार भी प्राप्त किये। उनका दृष्टिकोण स्वविकसित रहा है। उनके चित्रों में एक विशेष अन्दाज, आकृतियों को अंकित करने का निजी ढ़ंग रूप की प्रतीकात्मक सज्ञा है। उन्होंने तीन बार यूरोप व रूस का भ्रमण कियें तथा यूनान की अर्वाचीन कला प्रणालियों को समझें। इस प्रकार उनकी कला शैली पर विभिन्न कलाओं का मिश्रित प्रभाव परिलक्षित होता है। प्रारम्भ में आपके चित्रों में आकृतियाँ प्रधान थी, परन्तु 1960 ई0 के बाद पृष्ठभूमि के साथ समन्वित होने लगी। सन् 1961 ई0 में साओपाब्लों द्विवार्षिकी में विशेष उल्लेख हैं।

शामलाल के अनुसार-"रामकुमार को पोज बनाने या चेहरे पर मुखौटा चढ़ाने से नफरत है। दूसरे लोग प्रचलित धाराओं और फैशन से आकर्षित हो जाते होंगे। परन्तु रामकुमार जी अपना ही रास्ता पकड़ते हैं। वे अपनी ही आँखों से दुनियाँ को देखने के लिए जोर देते हैं। वे एक विद्रोही की विशेष सुविधाएँ नहीं चाहते। उन्हें किसी नारे की जरूरत नहीं है। कोई बैनर नहीं, कोई घोषणा पता नहीं।" रामकुमार की वाराणसी श्रृंखला आधुनिक कला का दस्तावेज है। रामकुमार के शब्दों में, "एक सत्य बराबर परिपक्व" होता गया कि वाराणसी में झेली हुई पीड़ा, निराशा की अंतिम परिणति, दुःख और उदासी की फैली झलक दिखाई पड़ती हैं।

रामकुमार को ललित कला अकादमी सम्मान तथा 1971 ई0 में भारत सरकार द्वारा "पद्म श्री" सम्मान दिया गया। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा कालिदास सम्मान, अमेरिका से जे0डी0 राकफेलर थर्ड फंड स्कालरशिप से सम्मानित किया गया। उन्होंने "दस भारतीय कलाकार" प्रदर्शनी अमेरिका में आयोजित की। उनके चित्र नेशनल गैलरी ऑफ मार्डन आर्ट व ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डिगढ़ म्यूजियम, टाटा इस्टीट्यूट ऑफ फन्डामेन्टल रिसर्च, मुम्बई आदि में संग्रहित होने के साथ ही नेशनल म्यूजियम बर्लिन व प्राँग, वाशिंगटन, न्यूयार्क में सुरक्षित है।

रामकुमार की कृतियों की पहली प्रदर्शनी शिमला में 1948 ई0 में लगी थी। तब से अब तक भारत के शीर्ष नगरों में उनकी अनेक एकल प्रदर्शनियाँ लग चुकी हैं। इनमें 1986 में मुम्बई में लगी उनकी सिंहावलोकन प्रदर्शनी शामिल है। विदेश में लगी एकल प्रदर्शनियों में प्राग (1955), कोलम्बो (1957), वार्सा (1958), लंदन (1966) और बुडापेस्ट की प्रदर्शनियाँ (1984) में शामिल हैं। भारत के बाहर अन्तराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में ऐट इण्डियन पेन्टर्स (न्यूयॉर्क 1959), साओ-पालोओ द्विवार्षिकी (1959, 1979, ब्राजील) गैलरी रेवेल (1962), एथेन्स (1984) मुख्य हैं। जिनमें रामकुमार की भागीदारी रही हैं। उन्हें 1956 और 1958 में ललित कला अकादमी ने अपना राष्ट्रीय सम्मान दिया और 2004 में स्वर्णजयन्ती वर्ष में उन्हें ललित कला रत्न सम्मान से विभूषित किया। उन्हें अनेक सम्मान भी मिले, जिनमें 1959 में साओ पाओलो द्वैवार्षिकी, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा कालिदास सम्मान (1986) प्राप्त है। अमेरीका से जे0डी0 राक फेलर थर्ड पंड स्कालरशिप से भी सम्मानित किये गये।

रामकुमार के चित्रों की विषय वस्तु एवं विशेषताएँ

रामकुमार की आरम्भिक कला पर शहर की सामाजिक विकृति हावी है, इनमें मध्य वर्ग की निराशापूर्ण खामोशी ध्वनित हुई है। इनके चित्रों में लोगों की आँखों बड़ी और चमकदार बनायी गयी है देखने से ऐसा लगता है कि उन्हें वे वस्तुएँ बहुत प्यारी हैं जिन्हें वे खोज रहे हैं। इससे लोगों के सामाजिक अलगाव की छवि मिलती है। वर्गों तथा त्रिभुजों के द्वारा बनी शहरी भवनों की भावहीन पृष्ठभूमि, हाथों की विचित्र रिक्त मुद्राएँ, गम्भीर उदास रंग-भूरा, मटमैला, कत्थई, काला और कहीं-कहीं लाल, नीले या पीले का एक स्पर्श, चित्र में करूणा की मनः स्थिति उत्पन्न करने के लिए है। घूमती हुई गली, नंगे तार के खम्भे, खींचकर कसे हुए तार और पूर्ण निष्क्रिय वातावरण मानों ठण्ड से जम गया हो ये सभी रामकुमार के चित्रों के प्रतीक हैं तथा कहीं-कहीं तो पृष्ठभूमि में कागज के मकान जैसे मानो मुड़-तुड़ कर गिरने वाले हैं जो शहरी समाज की आत्मघात की ओर बढ़ती हुई प्रवृत्ति के सूचक हैं लेकिन बाद में रामकुमार जी अपने चित्रों में उदासी के जगह दुःख भरे चित्र चित्रित करने लगे व उन चित्रों को अस्तित्ववादी दर्शन से भी प्रभावित माने गये हैं।

रामकुमार एक अभूतवादी चित्रकार है। इन्होंने वाराणसी घाटों के दृश्य-चित्रों की श्रृंखला तथा स्केच आधुनिक दृश्य-चित्रण की अमूर्त शैली उत्तम उदाहरण है। रामकुमार ने वाराणसी घाटों के इतने अधिक चित्र-चित्रित किये कि लोग इन्हें घाटों के शहनशॉह कहने लगे। बौद्धिक अनुशासन में बधकर बनाये गये चित्र-चित्रकार के कठोर संयम के परिचायक है। रामकुमार के मन पर वाराणसी की जो छाप पड़ती है, केवल उसी को इन चित्रों में अमूर्त शैली के दृश्य का रूप देने का प्रयत्न किये हैं। किन्तु इनमें भाव की गहराई नहीं है। रामकुमार द्वारा 1965-1967 ई0 के मध्य बनाये गये स्याही और मोंमी रंगों के चित्र बहुत प्रसिद्ध हुए तथा बाद में एक्रेलिक रंगों से भी बनारस आदि के शहरी दृश्य-चित्र अंकित किये।

सन् 1969 ई0 में रामकुमार के कला में एक नया मोड़ आया है। वे उदास रंगों के स्थान पर पीले तथा सुनहरी आभा वाला बादामी रंग के बड़े-बड़े क्षेत्रों के साथ चमकदार अर्धपारदर्शी, इन्द्रनील, कुसुम्भी तथा श्वेत अथवा काले भूरे रंग का प्रयोग करने लगे। चित्रण क्रिया के अंत में लगाये गये गहरे रंग के तूलिकाघातों से चित्र के ढ़ाँचे को सुस्पष्ट व्यवस्थित किये। अतः इसी में एक काल्पनिक परिप्रेक्ष्य का आभास दिये। जिससे कुछ आकार आगे और कुछ आकार पीछे एक सन्तुलित स्थिति का निर्माण करते थे। रामकुमार रंगों को चाकु के किनारे की सहायता से कैनवास पर लगाकर खुरच भी देते थे। जिसे कैनवास की बुनावट का प्रभाव दिखाई देने लगता थे। रामकुमार द्वारा चित्रित-चित्रों में रंगों के क्षेत्रों के आकार बड़े तथा हलचलपूर्ण बनाये गये हैं। चित्रों को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि मानों चित्रों का संयोजन केनवास की सीमाओं को तोड़कर बाहर आना चाहता हैं जो अमेरिकी चित्रकार "पोलाक" तथा "कूनिंग" द्वारा प्रवर्तित अमूर्त-अभिव्यंजनावाद की विशेषताएँ हैं।

रामकुमार एक कलाकार ही नहीं बल्कि वह एक कला समीक्षक भी हैं। अपनी रागात्मक अनुभूतियों को कैनवास पर अपने अंतर में उत्पन्न बिम्ब के आधार पर उतारते हैं। आप पेरिस आदि अनेक देशों का भ्रमण भी किये हैं। आपके अनेक चित्र भावलोक से सम्बन्धित हैं। परन्तु वे परम्परागत पौराणिक प्रतीकों पर आधारित है। आपके चित्रों में रंग योजन और रूप सज्जा का निजी महत्व हैं। आपको राष्ट्रीय ललित कला अकादमी से पुरस्कृत किया जा चुका है। आप मुम्बई के सर जे0जे0 स्कूल ऑफ आर्ट में अध्यापक पद पर कार्यरत रहे। आपके आरम्भिक काम में उजाड़ बिल्डिंगों के सामने, गलियों में खड़े, बेघर लोगों का चित्रण किये हैं। आपके चित्रण छाया और प्रकाश के मदद से सुघटय-निरपेक्ष छः प्रतिरूपण (सूडो मॉडलिंग) के जरिए किये हैं। इसलिए उनके मानव रूपाकार पूरी तरह मानवीय बनावट लिए नहीं लगते। मानव आकृतियों की रूप-रेखा, शक्तिशाली रेखाओं के बावजूद, कम से कम है और दृष्टिक्रम पर गौर करने से पता चलता है कि वह आकारों को सरल रखना चाहते हैं। सन् 1960 ई0 के दशक से उनकी कलाकृतियों में से आकृति गायब हो जाती हैं और भौतिक जगत के बिम्ब यानी भू-आकृति, चट्टानें, पहाड़ियाँ, घर, पक्षी, पानी का विस्तार, आकाश और बादल विभिन्न आकृतियों वाली समस्त प्रकृति उन्हें ज्यादा भाने लगते हैं आपके भू-दृश्य चाहे यथार्थ हो या काल्पनिक, इनमें रूपाकार-बनावट को मनचाहा रूप देने की खूब गुंजाइश रहती हैं। जबकि दूसरी तरफ विषय तथा शैली एक-दूसरे की सहायक होती हैं। आकारिक कला अनुकरणशील नहीं होती। यह अमूर्तन का प्रतीकात्मक साधन होती हैं, यह विचार की आरेखीय प्रस्तुति होती है, आवेग रहित आरेख या निर्जीव प्रभाव से मुक्त। यह जीवन से भरपूर होती है, फिर इसमें सन्तुलन तथा व्यवस्था होती है। रामकुमार के भू-दृश्यों में अमूर्त आकारों को तरह-तरह की लय कहा जा सकता है, जो अत्यन्त मौलिक हैं। ये आकार विभिन्न दिशाओं से रेखाओं के अन्दर की तरफ आने और बाहर की तरफ जाने की क्रिया से बनते हैं और इसके लिए नोकदार तूलिका और स्पैचुला (रंग लगान का औजार) का इस्तेमाल किया है। इससे भूदृश्य को देखने से पैदा होने वाली भावनाओं का सीधे प्रतिलेखन कर सकते हैं। पर यह सूक्ष्म-सादृश्यमूलकता वस्तुतः छटा प्रभावों तथा धरातल की समझ से उपजती है और इसका प्रयोग आकर्षक चाक्षुष रीति से किया जाता है।

रामकुमार का काम इस बात का उदाहरण पेश करता है कि कैसे छाया और प्रकाश के समतल क्षेत्रों को चित्रमय धरातल में ज्यामिति आधार पर व्यवस्थित किया जा सकता है जबकि इनका अस्तित्व संदर्भगत ही होता है। हालाँकि उनकी पेंटिंग्स स्वतः स्फूर्त दिखाई देती हैं, जबकि ये बड़ी सावधानी से निर्मित कृतियाँ हैं जो एक डिजाइन के तौर पर संतुलन तथा अ-संतुलन दोनों तरह की भावनाओं का एक साथ अहसास कराती हैं-असमितीय गति की भावना को व्यक्त करती है।

रामकुमार की कृतियाँ उनके व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक 'रूपाकार' हैं, जो अवधारणा को एक ढ़ाँचा प्रदान करती हैं और निजी अभिव्यक्ति की सीमाओं को दर्शाती हैं, लेकिन किस हद तक उनकी कला तथा अभिव्यक्ति की भाषा किसी व्यक्ति अथवा संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है-जिसका वह स्वयं भी एक हिस्सा है।

रामकुमार के प्रसिद्ध चित्रों महिला, अंधेरा जंगल, भीतरी सैरा, वाराणसी, लद्दाख मोनेस्ट्री, दुःखी शहर, परिवार, दो बहनें, उड़ान, धर, नगर दृश्य, श्रद्धांजलि, अलविदा, अतीत, युद्ध का आतंक, सपना, विलोपित स्त्रियाँ, बेरोजगार, परित्यक्ता दमयंती, बसन्त, मधुर स्मृति और मजदूर की मौत।

निष्कर्ष

वर्तमान शोध लेख के आधार पर यह कहा जा सकता है। रामकुमार भारतीय कला में अमूर्तन कला को जन्म दिये। यह कथन बहुत प्रासंगिक है कि रामकुमार के अनुसार संघर्षशील मनुष्य ही सृजनशील अधिक होता है। क्योंकि वह अपने संघर्षमय जीवन के क्रियाकलापों में कुछ करने की चाह में नया रास्ता खोज लेता हैं। संघर्षशील लेखक व कलाकार कभी शान्त नहीं बैठ सकता। क्योंकि उसके जीवन के उथल-पुथल में कुछ ऐसी चीज हाथ लग जाती है। जो उसे सृजन की ओर प्रेरित करती है। रामकुमार अपने जीवन के रास्ते को बहादुरी से तय करते और लोगों के उपेक्षात्मक रवैये को अनदेखी करते हुए अपना रास्ता खुद ढुँढ़े। अपने बातों को बहुत ही सरलता से समाज को समझाने में सक्षम थे। सबसे अहम बात यह है कि आप प्रसिद्धि की इतनी ऊँचाईयों को छूने के उपरान्त भी आप सादगी भरा जीवन व्यतीत करते थे। आपके सभी माध्यम में बने चित्रों में गहन आत्मानुभूति का भाव दिखाई देता है। आप ऐसे कलाकार व लेखक हैं जो विषय की गम्भीरता को समझकर चित्रों का निर्माण व लेखन करते थे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि रामकुमार के कलात्मक अभिव्यक्ति में जीवन का कटु अनुभव और संघर्षशील मानसिकता का बोध होता हैं, यह भी कहा जा सकता है कि आप ने सारे विश्व के दर्द को अपने में समेट कर सब चित्रों में प्रक्षेपण किये तो ऐसे चित्र जीवन के सभी पहलुओं को उजागर करने में अधिक संक्षम प्रतीत हुए ऐसा आभास होता है।

आप की सभी शैलियों में कालक्रम एक श्रृंखला रही है। कलाकार ईश्वर के सृजन अर्थात प्रकृति के सौन्दर्य को देखकर सदैव आनन्द प्राप्त करता रहा है। उदाहरण के रूप में गुहाँ चित्रों, पटचित्रों, पोथीचित्रों, भूमि अलंकरण चित्रों को परखे तो यह आभास हुआ कि सभी में कलाकारों ने अपने सौन्दर्यात्मक भावों का निरूपण किये हैं। इस प्रकार कला, कलाकार और समाज को एकात्मक भाव में देखा जा सकता है। विभिन्न आदर्शवादी पारम्परिक कला शैलियों, लोक कलाओं, शिल्प कलाओं और

आधुनिक कला विधाओं का परिशीलन करने पर यह कहा जा सकता है कि कलाओं के मध्य किसी सीमा रेखा को दर्शाना सही और उचित नहीं माना जा सकता।

भारत में कई ऐसी कला शैलियों का प्रादुर्भाव हुआ जिसमें मनुष्य के आन्तरिक सौन्दर्य को ब्रह्मा रूप में सौन्दर्य को प्रस्तुत किया गया। रामकुमार के चित्रों में मानवीय संवेदना, सामाजिक परिवेश तथा नगरीय चेतना अपने में समृद्ध मुखर हुई है। आपकी कला शैली में अमूर्तन कला का प्रभाव सबसे ज्यादा दिखता है और आप की कला सौन्दर्य मानवीय संवेदना आपके चित्रों में मुख्य रूप से देखने को मिलता है। आप अपने चित्रों में धूसर एवं चटक रंगों का समावेश देखने को मिलता है। रामकुमार "बनारस" का जो सीरीज सौम्य रंगों से चित्रित किये हैं वे आखों को शीतलता प्रदान करती है। आपके चित्रों में अमूर्तन जो कृतियाँ बनी है उनमें दुःख दर्द की संवेदनाओं को लेकर ही चित्रण किया करते हैं। नवीन कलात्मक सम्भावनाओं के अपने कृतियों द्वारा प्रस्तुत किये हैं, कलाकार अपने प्राकृतिक व सामाजिक परिवेश से जुड़कर ही आगे प्रगति कर सकता है और दृण संकल्प व सदैव प्रयत्न से ही अपनी मंजिल को पा सकता है और समाज में अपनी पहचान बना सकता है। ऐसा आपके चित्रों को देखने व लेखनी से आभास होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्रवाल, जी0के0, आधुनिक भारतीय चित्रकला, आगराः संजय पब्लिकेशन्स शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन, 2009*
2. *अशोक, कला सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र, आगराः संजय पब्लिकेशन्स शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन, 2013*
3. *गैरोला, वाचस्पति, भारतीय चित्रकला का सक्षिप्त इतिहास, इलाहाबादः लोक भारतीय प्रकाशन, 2009*
4. *चतुर्वेदी, ममता, समकालीन भारतीय कला जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2008*
5. *प्राण नाथ मागों, भारत की समकालीन कला, नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया नेहरू भवन, 2012*
6. *भारद्वाज, विनोद बृहद आधुनिक कला कोश, नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन दरियागंज, 2009*
7. *वर्मा, अविनाश बहादुर, भारतीय कला का इतिहासः प्रकाश बुक डिपो*
8. *वाजपेयी, राजेन्द्र सौन्दर्य भोपालः मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2012*
9. *शोध दृष्टि जनवरी-मार्च 2014 Vol.5 No.2*
10. *Kumar, Ram, In Ram Kumar; A Retrospective ExC., National Gallery of Modern Art, New Delhi, 1993*
11. *Verma, Nirmal, Ram Kumar, In Vadhera Art Gallery ExC., 2007(In Ram Kumar: Creative Journey with Pen and Brush, Yogendra Bali, Creative Mind, Vol. IV, 2007, p.14)*
12. *http://www.aicongallery.com/artists/ram-kumar/biography*
13. *https://en.wikipedia.org/wiki/Ram_Kumar_(artist)*
14. *https://www.architecturaldigest.in/content/artist-ram-kumar-memoriam/*
15. *https://www.jagran.com/delhi/new-delhi-city-ram-kumar-passed-17823806.html*
16. *https://www.livehindustan.com/national/story-ramkumar-between-colors-and-words-shabd-hinduatan-apna-rasta-1917844.html*
17. *https://www.tgtpgtkala.com/2020/12/artist-ram-kumar.html*